शिक्षादान

प्रहसन



लेखक

स्वर्गीय-पण्डित बालकृष्ण भट्ट

"हिन्दी प्रदीप" ग्रन्थावली की दूसरी पुस्तक।

॥ श्री ॥

शिक्षादान

अर्थात्

"जैसा काम वैसा परिणाम"

प्रहसन

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक—

स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट

रचित

नहीदृशमनायुष्यं लोके किंचन विद्यते।
यादृशं पुरुषस्येह पर दाराभिमर्षणम् ॥
"पर-तिय रमन" समान, नहि कुकर्म कोउ आन जग।
सुख ज्यों ग्रीषम भान, हरत आयु यह नरन कै ॥

प्रकाशक-एल. के. भट्ट--अहियापुर

इलाहाबाद।

ज्येष्ठ सं० १९८५

मुद्रक पं० विश्वम्भरनाथ वाजपेयी,
ओंकार प्रेस प्रयाग।

दूसरा बार १००० | | मूल्य ।=)

वक्तव्य ।

"नूतन ब्रह्मचारी" हिन्दी प्रदीप ग्रन्थावली की पहिली रचना है। यह उपन्यास हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट के सुललित लेखनी का रस निस्यन्द है हिन्दी संसार ने उस का यथोचित आदर किया। तदुपरान्त दूसरी पुस्तक "शिक्षादान" अर्थात् "जैसा काम वैसा परिणाम" प्रकाशित हुई, जो हाथोंहाथ बिक गई अब तो उस की एक भी कापी कहीं नहीं मिल सकती। "शिक्षादान" नामक एक छोटा प्रहसन सम्वत् १९३४ में पुस्तकाकार निकला था और "जैसा काम वैसा परिणाम" यह दूसरा प्रहसन हिन्दी प्रदीप के पहिले कई, अङ्कों में छप चुका है। ये दोनो अलग अलग प्रहसन थे, पर दोनों के विषय बहुत ही एक दूसरे से मेल खाने के कारण, कुछ इधर उधर घटा बढ़ा एक ही में सम्मिलित कर प्रकाशित कर दिया गया।

यह प्रहसन बहुत पुराना है, लेखक के लड़कपन की अवस्था में लिखा गया था। इस में उन के लड़कपन की कुछ झलक सी आगयी है। इस लिये इस को अधिक रुचिकर बनाने और up-to-date (समयानुकूल) करने के लिये इस की भाषा परिमार्जित करदी गई है और दो एक मनोरञ्जक सीन जोड़ दिये गये हैं।

हिन्दी के लिये यह परम सौभाग्य की बात है कि प्रायः सब ही स्थानों में स्कूल कालेज के विद्यार्थी नाटक मंडली बनाये हुए हैं और अक्सर ही कोई छोटा मोटा नाटक करने की इच्छा रखते हैं। ऐसे ही लोगों के लिये उन्हीं के ढंग का कि एक पढ़ा लिखा भले घर का लड़का अपने को सभ्य बनाये हुये, कुसङ्गति में पड़ किस प्रकार से अपने चरित्र को दूषित करता है। इसी प्रकार एक कुलवन्ती स्त्री अपने चरित्र के बल से किस बुद्धिमानी के साथ अपने कुमार्गी पति को कुमार्ग से हटा ठीक मार्ग पर लाती है। इत्यादि इसी प्रकार का खाका खींचा हुआ यह प्रहसन तैयार किया गया है।

आशा है हिन्दी के सच्चे मकरन्दपान लोलुप रसिकगण इस को अपनायेंगे और मेरा उत्साह बढ़ायेंगे कि मैं इसी तरह के और रुचिकर और शिक्षाप्रद प्रहसनों को लेकर उनकी सेवा में उपस्थित हो सकूं।

प्रकाशक।

श्रीः

शिक्षादान

अर्थात्

जैसा काम वैसा परिणाम

प्रहसन

नान्दी ।

जो धनवान सुजान को करि राख्यो अज्ञान ।
ईश्वर तिन्ह गनिकान सों करौ सदा कल्यान ॥
करौ सदा कल्यान इन्हैं सतपन्थ दिखावहु ।
पली धर्म अधर्म जगत में भेद बतावहु ॥
तजैं नीच सब कर्म करौ कछु ऐसो बोधन ।
बचै रूप सन्मान नसै नहिं अपनो जो धन ॥

(सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार-(नेपथ्य की ओर देख) प्रिये ! शृङ्गार कर चुकी हो तो आवो ।

(नटी आती है)

सूत्रधार-(नटी से) आर्ये ! तुम बड़ी भाग्यवती हो जो ऐसे ऐसे प्रतिष्ठित, परम सभ्य, धनी, मानी लोगों की सभा आज तुम्हारे अभिनय देखने को एकत्र हुई है। इन्हें यदि तुम

अपने गान के तान से रिझाओगी तो यथोचित सन्मान पाओगी। प्रिये! यह मण्डली प्राय: नवशिक्षित युवा पुरुषों की है। ऐसे लोग बहुधा हास्यरस के बड़े रसिक होते हैं इससे कोई हास्यरस प्रधान अभिनय से इन्हें तुष्ट करो।

नटी—(हाथ से उसे हटा) चलो हटो! मुंह छिपावो, जी जला जाता है। तुम्हें लाज नहीं आती, गाना बजाना सूझा है। इन्हें हास्य रस से तुम रिझावोगे! ये तो स्वयं हास्य के आधार पात्र हैं इनके तो चरित्र ही ऐसे हैं कि उन पर ध्यान देने से आप ही हँसी आती है।

सूत्रधार- क्यो! क्यों! रूठी सी क्यो देख पड़ती हो? जिसमें तुम प्रसन्न हो वही हम करें। इन्हें जो तुम हँसी के पात्र समझती हो तो आज इन्हीं के चरित्र का कोई अभिनय करो।

नटी--जब से हमने अपनी प्रिय सखी मालती का वृत्तान्त सुना है तब से हमने दृढ़ निश्चय कर लिया कि पुरुष व्यक्ति का कुछ विश्वास नहीं इनका भँवरे का सा स्वभाव है ये केवल सुख और आराम ढूंढ़ते है दूसरे की पीर ये कुछ नहीं समझते।

सूत्रधार--प्यारी! तुमने अच्छा सुझाया मालती का रूपक ऐसे लोगों की शिक्षा के लिये बहुत ही उत्तम होगा। चलो! इसी के लिये इन्हें लज्जित करें।

(दोनों गये)

इति प्रस्तावना।

पर्दा पहिला

(स्थान—रसिकलाल का अंगरेजी ढंग से सजा हुआ कमरा)

भोला—(कुर्सी मेज झाड़ता है) यारों क्या कहूं, सबेरा हुआ भोला, शाम हुई, भोला, करवट बदली भोला, उठे नहीं कि बस भोला की हांक लगाई। भोला आदमी नहीं दो पैर का जानवर है। या भगवान् अब कि बार पैदा करना तो चाहो किसी दफ़्तर का बाबू बना देना; पर खिदमतगार न बनाना, यानी काला बनाना पर काली सूरत न बनाना। (इधर उधर देखकर) बाबू साहब तो अभी सो रहे है, एक बार मैं भी तो अपना हौंसिला निकाल लूं ज़रा बाबू बनकर हुकूमत तो कर लूं। (कुर्सी पर बैठे पुकारता है) भोला (फिर खड़ा होकर झुकके) जी सर्कार (कुर्सी पर बैठ) अबे हुक्का तो ताज़ा कर ला (खड़ा हो और झुककर) अभी लाया सर्कार (फिर बैठकर और अपना कान पकड़) क्यों बे गधे ? अभी गया नहीं (उठकर) अभी तो गधा यहीं खड़ा है (कुर्सी पर बैठा बैठा सो जाता है)

(रसिकलाल का भोला २ पुकारते प्रवेश) भोला चौंक कर उठ बैठता है।

रसिकलाल—भोला !

भोला—जी सर्कार

रसिकलाल—अबे क्या सो रहा था ?

भोला—हुजूर सो नहीं ज़रा ऊंघ रहा था।

रसिकलाल—क्या घर पर नहीं सोया ?

भोला—जी लड़का घर पर सोने नहीं दिया

रसिकलाल—तो लडके को यहां भी क्यों नहीं लाया कि तुझे यहां भी सोने न देता। जा देख कोई चिट्ठी विट्ठी आई हो तो ले आ।

भोला—बहुत अच्छा (जाता है)

रसिकलाल—(टिलिफोन उठाकर) डबल आउ आउ वन थ्रीस ! हल्लो ' आप कौन, डाक्टर चोपड़ा, हां हां हां··· अच्छा, तो कहिये आज के जल्से का क्या तय रहा, अच्छा, अच्छा, आप तो वहां पहुचे ही रहैंगे, मै ठीक ५–३० पर पहुंच जाऊंगा (डायरी निकाल लिखना चाहता है कि फिर टिलिफोन पुकारता है)। आप कौन ! मिस ज़ुलेखा ! थैंक यु मै आपके खिदमत में हमेशा हाज़िर हूं, उम्मीद है क्लबघर में आपसे विज़िट (visit) कर सकूंगा। yes, yes, of course, don't mind it please,···गुड डे। (फिर टिलिफोन बजता है) हल्लो, कौन, झगडुआ मेहतर ! क्या बकता है बे ! कैसी बखसीस? उस दिन नशे में नाली से निकालने की बखसीस,···क्यों बे यह गुस्ताख़ी,·· लगाऊं

जूते,…क्या कहा मैं भी लगाऊंगा? (गुस्से में आकर टिलिफान को जूते लगाता है) बस, खबरदार अब बोला तो सैकड़ों लगाऊंगा। (सोचकर) बहुत दिनों से हिसाब नहीं लिखा है आज उसको ज़रूर खतम करना है (डायरी निकाल हिसाब लिखता है)

रविवार १ अपरैल १९२८

सुबह नौ बजे सो के उठे, नौ से ग्यारह तक जूते में ब्रॉकों लगाते रहे, शाम को एक बक्स पियर्स सोप और एक जोड़ा जनेऊ खरीदा, जनेऊ बिलकुल टूट गया था गट्ठी देकर भी पहिनने लायक न रहा। न इसमें ताली ही बंध सकी। हैथवे की दूकान से, एक दर्जन सिलकेन सर्टस् (shirts) दो दर्जन धारीदार मोजे, छः कालर, छः नेकटाई, तीन जोड़े इङ्गलिश मेड जूते खरीदे।

रिमार्क—हम उनकी बे अकली को कहाँ तक पछतांय, न जानिये उन्हें क्या शामत सवार है, जिन्होंने देशी कपड़े पहिनने का प्रण कर छोड़ा है हमें तो देश के बने भद्दे मोटे कपड़े देख घिन होती है—

सोमवार दूसरी अप्रैल १९२८.

दो बिलों का पेमेन्ट आज जरूर करना था, पर रुपया पास नदारद, घर गया wife (वाइफ़) को बुला कर १०५) रुपया मांगा इनकार करने पर मुझ से रहा न गया, उसकी खूब ही मरम्मत

की और एक हाथ का ठोस सोने का कड़ा उतार लिया। वाइफ़ का चिल्लाना सुन मां दौड़ आई, मैं गुस्से में आ उन्हें पीछे को ढकेला पर वह सीढ़ियों पर गिरीं खूब चोट आई, उन्हें वैसा ही छोड़ अपने कमरे में आया, शराब वाले की बिल अदा की। दूसरे को नेक्स्ट (next) संडे आने बोला।

रिमार्क--बूढ़ी मां चोट खा गई है ज़रूर, रो धो आपही शान्त हो जायेगी।

मङ्गलवार तीन अपरैल १८२८.

आज ५००) रुपया इस शर्त पर क़र्ज़ लिया कि जब बाप मरेंगे तब १०००) रुपया देंगे, बी साहबा की कुर्त्तियां मंगाई, मगर दर्ज़ी ने अभी तक नहीं तैय्यार की थी नौकर के वापस आने पर मैं खुद हन्टर ले कर गया, दर्ज़ी से कहा सुनी हो गई, उस बदमाश ने दो आदमियों को उसका दिया जिन्हों ने हन्टर मुझ से छीन न जाने कितने जड़े।

(Very confidental remark) दर्ज़ी के मार का तो कुछ रंज नहीं मगर कुर्त्तियां न मिलीं, आज उनको अपना क्या मुंह दिखायेंगे।

बाई जी के यहां कहला भेजा आज कई दस्त और कै आ गये इस वजह से शायद न आ सकूंगा, कुर्त्तियां आप की तैयार हैं तबियत ठहरने पर हाज़िर करूंगा। अरे ओ भोला! भोला!

(भोला आता है)

क्यों बे, उल्लू सुनता है, हुंकारी भी नहीं भरता, तू भी बड़ा गधा है।

भोला—बडा गधा तो मेरा बाप था, मैं तो छोटा गधा हूं, पर सरकार मुझसे यह न हो सकेगा, सबेरा होते ही चिलम भरूं, हुक्का भरूं, पानी भरूं, मटके में अनाज भरूं, टूटी बाइसिकल में हवा भरूं, अब आपने यह पख निकाली कि हुंकारी भी भरूं, इसके लिये दूसरा आदमी रख लीजिये और मेरा हिसाब चुकता कर दीजिये।

रसिकलाल—अबे जा, जा, जल्दी हुक्का ताज़ा कर ला।

(दो नागरिकों का प्रवेश)

(उचित शिष्टाचार के बाद)

पहला—यह तो आपको मालूम ही होगा कि हम लोगों ने एक संस्था नागरी प्रवर्धनी सभा के नाम से खोल रक्खी है, उसका उद्देश्य नागरी का प्रचार करना है, और उसका संदेशा घर घर पहुंचाना है।

रसिकलाल—वाह ! वाह ! काम तो बहुत ही अच्छा है, और मेरे ऊपर बड़ी दया की जो यहां पधारें, पर यह तो बताइये वह है कौन ?

दूसरा—बाबू साहब नागरी एक ज़बान है।

रसिकलाल—अजी समझा, जबान तो है पर यह बताइये कुछ खूबसूरत भी है या वही सेकेंड हैंड।

पहिला—नारायण ! नारायण ! शायद आप समझे नहीं ।

रसिकलाल—समझे क्यों नहीं ? वह नागर लोगों की औरत नागरी को कह रहे हैं न आप ।

सब लोग—राम राम ! क्या अपशब्द मुंह से निकाल रहे हैं। नागरी एक पवित्र हिन्दी भाषा है, जो माता के स्तन के साथ हम लोगों को पिलायी जाती है और नस नस में और रगों रगों में खून के साथ दौड़ती है। इसकी उन्नति के लिये हम लोगों ने एक संस्था खोल रक्खी है, उसका प्रचार करना हम लोगों का प्रधान लक्ष्य है, उसके प्रचार में धन की बड़ी आवश्यकता है । आप हिन्दू हैं, भारत की सन्तान है। प्राय: सब लोगों ने स्वशक्त्यानुसार सहायता की है, आशा है कि आप भी अपनी उदारता का परिचय देंगे और हम लोगो को विमुख न करेंगे ।

रसिकलाल—देखिये साहब ! हम कोई काम सरकार के खिलाफ नहीं करना चाहते । आप सच जानिये, यदि आज कलक्टर साहब मुझसे कहें कि कुआं में कूद पड़ो, तो मैं फौरन कूद पड़ूँ ।

पहिला—पर महाशय यह कोई सरकार के खिलाफ कार्रवाई तो नहीं है अपनी भाषा की उन्नति करना, अपनी उन्नति करना है, अपने बच्चों की उन्नति करना है ।

रसिकलाल—यह आपका कहना ठीक है, देखिये आज कल मैं

दो महीने से बिमार पड़ा हूं, डाक्टर ने मना किया है कि किसी से बात न करें, तबियत ठीक होने पर मैं फिर इस विषय में बातचीत करूंगा ?

(सबों का जाना और नब्बू भडुआ का आना)

रसिकलाल—आओ भाई नब्बू, बैठो ? सब ख़ैरियत तो है।

नब्बू—आपकी इनायत है, बाई जी ने यह ख़त दिया है। (पत्र देता है)।

रसिकलाल—(खोल कर पढ़ता है) "सारी रात सिर में दर्द रहा, तड़पा किये, कोई दाबने वाला नहीं। देख लिया, तुम्हारा प्रेम देख लिया। अगर दर्जी के यहां से कुर्तियां लेकर आज न आओगे तो फिर मेरी ड्योढ़ी पर पैर रखने की हिम्मत न करना"—मोहिनी।

नब्बू, जाओ, अभी जाओ, डाक्टर मुकर्जी को साथ लिवाते जाओ, वह न मिले तो डाक्टर व्यास को ले लेना, अगर वह न जाना चाहें तो डाक्टर झा से मेरी तरफ से हाथ जोड़ के कह देना कि वह ज़रूर देख लें। लो यह पच्चास रुपये की नोट रख लो, जो कुछ ख़र्च लगे करना। मैं अभी कुर्तियां लेकर हाज़िर होता हूं, तब हिसाब कर लिया जायगा। देखना भाई, खूब ख्याल रखना तुम्हें मेरी क़सम है (नब्बू जाता है)।

(राधा बल्लभदास का प्रवेश)

रसिकलाल—आइये बाबू राधावल्लभ दासजी, जयराम जी की।

राधावल्लभ दास—जयगोपाल, बाबू जयगोपाल!

रसिकलाल—(All Right) कोई नई खबर सुनाइये।

रा० ब० दा०—(सिगरेट पीता हुआ) क्या कहूँ बाबू? उस दिन सेठ गप्पूमल के यहां जो जलसा हुआ था उसमें भोरही को जो झूमड़ हुई थी जिसमें शहर की चुनी २ खूबरूयाँ जमा थीं आप सच मानिये जिसे मैंने आपके लिये चुन रक्खा है वैसी वहां एक भी नहीं थी। यक़ीन रखिये माल ऐसा फ्रेश (fresh) और चौकड़ है कि देखियेगा तो लार टपक पड़ेगी।

र० ल०—सच कहो।

र० ब० दा०—आप जानते हैं मैं कभी झूठ बोलता हूं? पर ज़रा रुपये ज़ियादह ख़र्च होंगे।

र० ला०—उं.! क्या परवाह है। रुपये है किस लिये तुम्हें मालूम है हमको इसका निहायत शौक है। चार भले आदमियो में रहना पड़ता है ज़रा ऊपर से रंगे चुने न रहें तो काम नहीं चलता वरना हमें तुम कुछ कम न समझो। ऐसी ऐसी बातों का ढङ्ग तो हमसे कोई सीख ले।

रा० ब० दा०—जनाब! सैकड़ों ऐसे ऐसे मामले निपटा डाले।

उसके लिये अलबत्ता बड़े ख़ौफ की जगह है जो इन कामों मे अभी ऐप्रेंटिस (Apprentice) और नौसिखिया हो।

र० ला०—हां तो तुमने क्या तय किया?

रा० ब० दा०—जी मैने दरियाफ़्त किया था वह एक रक़म राज़ी है पर . ... ।

र० ला०—पर क्या?

रा० ब० दा०—(तीन अंगुली दिखाकर) इतने सौ का खर्च है।

र० ला०—वही हो ' कहे तो जाते हैं रुपये की कुछ चिन्ता नहीं है। तीन सौ क्या हम तीन हजार खरच सकते हैं।

र० ला०—भला तुम पक्का कहते हो, राज़ी हो जायगी?

रा० ब० दा०—जी ऐसा न होता तो मैं कभी बीड़ा न उठाता। उ: "येही पापर बेलते धौले आये केश" आप जानते हैं मैं जो ऐसे कामों का जोहरी हू कभी चूकनेवाला हू। सच मानिये मामला भी बड़ा चौकड़ है। खैर! यह तो सब हुआ अब बताईये कुछ शगल को भी है।

र० ला०—हां रिफ्रेशमेंट (Refreshment) के लिये कुछ ज़रूर चाहिये। Wait a little, I have bougnt some new bottles from kilner's this morning.

रा० ब० दा०—Very well? please look sharp then

(रसिक लाल भीतर गया)

रा० ब० दा०—(मनमें) इस काठ के उल्लू को खूब फंसाया, दो

ही महीने में इसकी सब जायदाद ले हुर्र किये देता हूं। तीन महीने हुए जब से इससे जान पहचान हुई कई हज़ार रुपये खर्च कराये उसका चौथाई अमल्लक उस्तादों की गोड़ी हुई। खूब चैन उड़े। अच्छा! तो यहाँ बिलाई के क्या भैंस लगती है? रोज़ नया शिकार मारना और गुलछर्रे उड़ाना। इस तीन सौ में भी दो सौ हमारे बाप का हो चुका। दस बीस खर्च किसी अखोड़ से इसे मिला दूंगा। वाह! क्या सोच घर से चला और क्या हो गया। इलाही-जान से क़ौल कर आये थे कि रसिक लाल को तेरे यहां ला झुकाते हैं। यहां कुछ और ही तार जम गया। अच्छा! कुछ चिन्ता नहीं। उस बुड्डो को भी झुल दूंगा नहीं कोई दूसरा असामी इससे भी अधिक मालदार उसके यहां ले जा झुका दूंगा, (ठहर कर) इस को देर बड़ी देर हुई क्या करने लगा। (नेपथ्य की ओर देख) हो आ तो रहा है। सब का सब इससे झंस लें इलाहीजान के यहां जाता हूं तो शराब का ख़र्चा मुझी को देना पड़ता है। आज इसी से काम चलाऊंगा।

(बोतल और ग्लास हाथ में लिये रसिकलाल का प्रवेश)

रा० ब० दा०—भाई! बड़ी देर हुई अब हम जाते हैं।

र० ला०—कैसे खफ़ा हो इतनी देर से बैठे थे, जब हम माल लाये तब उठ खड़े हुए।

रा० ब० दा०—तो क्या यह सब हमारे ही लिये है ?

र० लाल—और नहीं क्या !

रा० ब० दास—हमें तो अब बड़ी देर हुई तुम्हीं इसे अपने मसरफ में लाओ। नहीं ! इसे हमें दे न दो कल हमारे बाप की मासिक श्राद्ध भी है। उच्छिष्ट हो जाने से देवता पितर के काम की न रहेगी (बोतल उसके हाथ से ले दुपट्टे में लपेट जाने लगा)।

र० लाल—ठहरो ! ठहरो !! अभी और कुछ बात करनी है। कहो ! उस दिन के फड़ में क़रीब एक हज़ार के हाथ लगे ?

रा० ब० दास—जनाब ! आप से बन न पड़ा जल्दी कर गये, हम होते तो दाम दाम उतार लेते असामी बनाने की भी हिकमतें हैं। आपने तो पहिले चुम्मे गाल काटा। पहिला रोज़ था उस दिन कुछ उसे चुग्घी दे रखना था दूसरे दिन ऐसा मारते कि साँस न आती, बड़ी मेहनत से घात पर चढ़ाया था अब हाथ आना ज़रा मुश्किल है, खैर ! कोई दूसरी चिड़िया फँसायेंगे कोई न कोई काँपे में आही जायगा। तो उस हज़ार में हमारा और आप का टालटाल तो रहेगा न ?

र० लाल०—हां ! हमें तुमसे कोई उज़र नहीं है। क्यों न रहेगा !

रा० ब० दा०—तो लीजिये कल ही एक नया असामी और लातेहैं।

र० लाल—एक बात तुमसे और निहायत पोशीदा करना था

उसे तुम्हीं कर सकोगे। हम यक़ीन करते हैं उसका ज़िक्र कभी मुंह पर न लाओगे।

रा० ब० दास—हुजूर फ़रमावें बन्दा ब दिलोजान बजा लाने को मुस्तैद है।

र० लाल—(कान में कुछ कहता है)।

रा० ब० दास—(क़हक़हे मार) वाह वाह ख़ूब कहा अच्छा देखेंगे।

र० लाल—(ऐंडाते जँभाते उठ खड़ा हुआ और चलते चलते) अब आज तो बड़ी रात गई दो एक प्याले नोश कर सोयेंगे कल मिलोगे तो उस बात की सलाह करेंगे।

(एक ओर से राधा बल्लभ दास और दूसरी ओर से अपना हुक़्क़ा लिये रसिक लाल का प्रस्थान)

पर्दा दूसरा।

(स्थान-ज़नानख़ाने में रसोई घर)

(हाथ में दिया लिये मालती का प्रवेश)

मालती—रसोईं करनेवाली ब्राह्मणी चली गई, उनके खाने को कुछ रख गई है कि नहीं तीन दिन बीत गये क्या जानिये आज आवें ? (एक कोने में ढकने से ढँका बरतन देख) हो रख तो गई है, मालूम ! (बायें हाथ में दिया लै दाहिने

हाथ से बरतन खोलती है) इस में क्या रख गई है ? (देखती है) लुचुई, पराठा, साग, भाजी, मीठा, दही सब कुछ तो है एक सुरुवा नहीं है । रोज़ सुरुवा खाने की बान उनकी पड़ी है बिना उसके कैसे खायेंगे (सोच कर) अब कौन उपाय करू' परसों जातो बिरिया कह गये "जाते है आज रात को हम न आयेंगे" सो वह रात बीती, कल का दिन और रात बीती, आज का दिन बीता अब तक नहीं आये । कौन जानै उन्हें कुछ हो तो नहीं गया । कभी हमसे बोलते नहीं इस बात का मुझे कुछ दुख नहीं है जो कुछ बदा था हुआ जी से सुखी रहैं जो भावै सो करैं । हमारे भाग्य में जो सुख बदा होता तो क्या तिरिया का जन्म पाती । नारी के जन्म समान घिनौना जन्म किसी का न होगा, जिसने पुर्बले में बड़े २ पाप कर रखे हैं वही स्त्री का जन्म पाती हैं। पराधीन, तिस पर भी अनेक यातना, जैसा बन्द पिंजरे में पखेरू । ऊंची ऊंची दीवालों से घिरा हुआ घर क्या मानो पिंजरा है । सूर्यदेव भी जिसका मुख कभी नहीं देखते हो, हवा न अङ्ग स्पर्श कर सकती हो, जिसने बाहर कभी पांव न रखा हो वही नारी सती, कुलवती, पतिव्रताओं में मुखिया समझी जाती है । लिखने पढ़ने से चरित्र बिगड़ जाता है इस कुसंस्कार के कारण उन्हें लिखना, पढ़ना नहीं सिखलाया जाता । बचपन ही से रोना, गाना, गिल्ला, चबाव

का अभ्यास करते करते उमर बढ़ जाने पर भी वही सब बातें बनी रहती है। यहां तक कि अन्त में बड़ी कर्कशा चण्डी कलहकारिणी होती है। अच्छा! तो यह सब किसका दोष है? हम लोगों का तो इस में कोई दोष नहीं है। लड़कपन में बाप मां के आधीन रहती हैं, ब्याह होने पर सास, ससुर और पति के वश में रहीं। जो वे हमें अच्छी तरह रक्खें; लिखना, पढना सिखावें; हमें तुच्छ न समझें; हमसे घिन न करें; मनुष्य का सा बर्ताव हमारे साथ करें और कहां लौं मुँह भर से भी हम से बोलें सही, तौ भी हम अपना भाग्य सराहें और अपना जन्म सफल मानें। आठही वर्ष में हमें ब्याह देते हैं सो भी बिना देखे, भाले, और फिर बहुधा एक ऐसे के साथ कि जन्मही नष्ट होजाता है।

(नेपथ्य में) यहीं दे जा खाने को (थोड़ा ठहर) अरे ओ बाम्हनी! मिश्राइन है कि मर गई। बोलती क्यों नहीं?

मालती – आये मालूम! घर में तो कोई है भी नहीं। यहां से हम कैसे जवाब दें। दिन भर के भूखे हैं मिश्राइन न जानें कब आयेगी? चलो हमीं खाने को धर आवें। (एक हाँथ में दिया दूसरे हाँथ में थाली लिये बैठक में थाली रखने जाती है दूसरी ओर से रसिक लाल का प्रवेश)।

र०लाल- घर में क्या कोई नहीं है सब मर गये (मालती को आते देख) हरामज़ादी घण्टो से चिल्ला रहे हैं कुछ जवाब क्यों नहीं देती, क्यो खाना तैयार हुआ?

मालती—हां ! तैयार है लिये आती हूं।

र० लाल—यहां ला—देखें क्या क्या है ? (थाली देख) यहक्या अपना सिर लाई है। सुरुवा क्यों नहीं पकाया गया। ले जा हम नहीं खायेंगे। हरामजादी, लुच्चिन ! तेरी शामत आई है एक दिन हम तुझे खूब ठीक करेंगे (जाने को होता है)।

मालती—हां ! हां क्रोध शान्त करो ! आज बाम्हनी प्रदोश भूखी थी मांस कैसे चुराती। तनिक ठहरो ! हमी तैयार किये देती हैं। जानती होती कि आज तुम आवोगे तो सुरुवा पका रखती। तुम्हारे आने का तो कुछ ठीक था नहीं कभी आये कभी न आये। छिन भर बैठो मैं अभी तैयार किये देती हूँ।

र०लाल—बैठें तेरा सिर ! यहां अन्धखोपड़ी में बैठ तेरा जला चूल्हा सा मुँह देख कृतार्थ हो जायेंगे (जाने लगा)।

मालती—(आकुल भाव से सामने जाय हाथ से उसे रोक) सुनो ! सुनो ! जाओ न तुम्हारे पांव पड़ूँ तुम्हें मेरी क़सम, बिना खाये चले जाओगे तो सारी रात मेरा जी करोटता रहेगा। तनिक बैठो मैं सब तैयार किये देती हूँ।

र० लाल—हरामज़ादी ! हम सब तेरी हिकमत समझते हैं। तू बहाने बहाने आज हमें घर रक्खा चाहती है। हट जा हमारे आगे से (हाथ से धक्का देता है मालती थाली समेत गिर पड़ती है और आप गाली देता चला जाता है)।

मालती—(उठ कर) हाय नसीब ! कुछ बात भी कहना दुर्घट है (दु:ख से) आज बिना खाये गये हैं वह भला काहे को खाने पीने को पूँछेगी। जैसा मेरा जी कलपाता है वैसा उसका थोड़े ही कलपायगा । अरे तनिक भी ठहर जाते तो तुरन्त मैं सब तैयार कर देती । क्या मैं जाने को मना करती थी फिर क्या मेरा कहा मान जाते ? घर में वे कब रहते हैं । हाय ! ऐसा नसीब ! जब से व्याह के आई हूँ कभी आँखभर एक बार उनकी सूरत आज तक न देखी कि कैसे हैं काले या गोरे । और बात को कौन झीखै एक बार घर में खाने आते हैं तब भी सीधे से जो दो एक मीठी बात बोलें तौ भी जी जुड़ा जाय सो भी नहीं—केवल गाली और फिटकार-अच्छा ! वह भी सही, आज खा कर जाते तो मन निश्चिन्त रहता दिन भर पीछे खाने आये वह भी इस अभागिन के कारण आज उन्हें मयस्सर न हुआ ।

(मङ्गला का प्रवेश)

मङ्गला—बहू ! कहाँ हो तनिक दूध ...... (देख कर अचरज से) यह क्या हुआ रे ?

मालती—(संकोच से मन की बातें छिपाती हुई)हुआ क्या मौसी! तीन दिन पीछे आज घर आये जो जानती होती कि आज आयेंगे तो मिसराइन को रोक रखती । खाने को माँगा मिसराइन थी नहीं हमी थाली लेकर झपट कर चली राह

में बिछुला कर गिर पड़ी यही देख उन्हें गुस्सा आया बक झिक चले गये। यही सब सोंच सोंच रो रही हूं। सारी रात भूखे रहेंगे और इतना अन्न ख़राब गया वह अलग।

मङ्गला—हाँ! तभी तो वह उसी किरोध में भरा गया है।

मालती—(रोकर) मेरा नसीब मौसी! भला तुमही बताओ इसमें मेरा कौन अपराध! तनिक ठहरे भी तो नहीं! ठहरते तो मैं दूसरा खाना पका देती (रोने लगी)।

मङ्गला—न रो बहू! तुम धन्य की हो जो सब बरदास्त करती हो। उसकी चाल ठीक नहीं है, क्या किया जाय?

मालती—क्या कहे मौसी! हम सन्तोष किये है। उन्हें जिसमें सुख मिलै सो करें। जैसी उनकी मौज हो वैसे रहैं। हम सब में राजी हैं आज खाके जाते तो मेरा जी न करोटता। क्या लेने आई हो मौसी!

मङ्गला—बहू! तेरे समान सती, सावित्री काहे को कहीं मिलेगी हाय! हाय! ऐसी बहू को ऐसा कलेश।

मालती-(ठढी सांस भर कर) तुम कौन काम से आई हो मौसी?

मङ्गला-सिकहर पर दूध था वहाँ बिल्ली निगोड़ी घूमा करती है, गिरा दिया, लड़के के लिये थोड़ा दूध दे दे।

मालती—बरतन लाई हो तो चलो दें—

(दोनों गईं)

पर्दा तीसरा

स्थान—मोहनी वेश्या का घर

राधा बल्लभदास—बेईमानी, सरासर बेईमानी, एकदम बेईमानी, पड़ी से चोटी तक बेईमानी। सिवा बेईमानी के कोई बात ही नहीं। इन आबकारी वालों का सत्यानाश हो जाय, दिन दोपहर में लूटते हैं, आंख के सामने शराब में पानी मिलाकर बेंचते हैं और कोई पूछता नहीं। लोग कहते हैं अहीर दूध में पानी मिलाते हैं, बड़ा बुरा है, हलवाई मिठाई कम तौलते हैं, .जुर्म है, बनिये घी में चर्बी मिलाकर बेंचते हैं, पाप है, पर यह कोई नहीं देखता कि ये हौली वाले, एक बोतल की आठ बोतल बनाकर सरे आम पबलिक को ठगते है और कोई चूं नहीं करता। महात्मा गांधी चर्खा चलाने का उपदेश देते हैं, वड़े बड़े लीडर कांग्रेस के प्लेटफार्म पर खड़े हो लेक्चर झाड़ते है, कौंसिलों में बड़े २ प्रस्ताव उठाये जाते है, पर इन अक्ल के दुश्मनों को यह नहीं सूझता कि जब तक ये आबकारी वाले घूस दे देकर संसार को ठगते रहेंगे, स्वराज्य कैसे होगा? बोतल की बोतल गटक जाता हूं नशा ही नहीं होता। क्या करूं आदत से लाचार हूं नहीं तो आज से शराब को बायकाट कर देता और हर एक पीने वाले को मना करता, पैरों पड़ता और सत्याग्रह करता कि भाईयों

जब तक शराब में पानी मिलाना बन्द न हो, कोई शराब न पीये।

एक ओर से रसिकलाल और दूसरी ओर से धूमनखां उस्ताद और बजरंग तबलची का प्रवेश

(सब अपनी २ जगह पर बैठ जाते हैं)

रसिकलाल—किस पर आज बड़ा बिगड़ रहे हो भाई ?

राधावल्लभदास—कुछ न पूछो, रसिकलाल ! दुनियाँ बेईमानी से भरी है।

रसिकलाल—क्या हुआ क्या ?

राधावल्लभदास—क्या कहें चारों तरफ बेईमानी ? जिधर देखो उधर बेईमानी ? दूध में, घी में, शक्कर में, आटे में, धर्म में, कर्म में, पूजा, पाठ, ज्ञान, ध्यान सब में बेईमानी, सौ बात की एक बात तो यह कि मेरी शराब में भी बेईमानी। दो बोतल पी डाला नशा का नाम नहीं। मालूम नहीं ये हौली वाले शराब में पानी मिलाते हैं या पानी में शराब।

बजरंग—ठीक है हुजूर इसमें क्या शक ? कोई देखने सुनने वाला नहीं है ? "शराब मत पीओ" "शराब मत पीओ" जहाँ देखो सुदेशी वाले चिल्लाते फिर रहे हैं।

राधावल्लभदास—अजी इन्हीं स्वराज्य वालों ने तो सब सत्यानाश कर डाला। संसार में कितनी बुराईयां फैली हुई है उनको नहीं रोकते और जो मदिरा सनातन से चली आ

रही है, बड़े बड़े ऋषि मुनि जिसको सोमपान कह कर पिया करते थे, ऐसी पवित्र वस्तु को रोकने का निरर्थक घोर प्रयत्न कर रहे हैं। मेरा बश चले तो इन बनमानुषो को पिंजड़े में भरवा २ सहारा के जंगल में छुड़वा दें।

रसिकलाल—(हँसकर) यदि तुम्हारा अधिकार होता तो तुम शराब को क्या करते ?

राधावल्लभदास—भाई वाह ! यह आपने खूब कही। मेरा बश होता, तो मैं मुहल्ले मुहल्ले चोखी शराब की दुकान खुलवा देता, पानी मिलाने वाले को फांसी नहीं तो कालापानी ज़रूर भिजवा देता, दुकान सारी रात खुला रहने का गवर्नमेंट से परवाना ले लेता, ताकि समय पर किसी शराबी को मदिरा के लिये कष्ट न उठाना पड़े। यात्रियों और ब्राह्मणों को मुफ़्त पिलवाता। विद्यार्थियों के लिये आधा दाम। श्राद्ध में ब्राह्मणों को पानी की जगह मदिरा पिलवाने के लिये मुफ़्त बटवाता।

धूमनखाँ—(पीनक से चौंक कर) न घबड़ाइये बाबूसाहब ! अब वह वक्त अनक़रीब है जब इन सुदेशी वालों की एक भी न चलेगी। इन कम्बख़्तों ने चीन में भी बड़ी गड़बड़ी मचवा दी थी, हुज़ूर, आप लोगों ने तो सुना ही होगा, कागज़ो में भी पढ़ा होगा चीन में बड़ा जंग मचा है, वह क्या था यही कि इन लोगों ने अफ़ीम पर टिक्कस लगवा दिये चीन की

रियाया बिगड़ खड़ी हुई, लिफाफ़ा पोस्टकार्ड लेना बन्द कर दिया, यह तो कहिये सरकार ने इन लोगो को वहां से भगा दिया, और ऊँटो पर लाद लाद राजपुताने से अफ़ीम भिजवा दी, खैरियत हुई, नहीं तो गदर हो जाने में क्या क़सर थी।

बजरंग—पर अभी तो ये सुदेशी वाले आफ़त जोते है। सरकार इनकी ख़बर भी नहीं लेती। अब आज कल इन लोगो ने एक नया शिगुफा उठाया है कि कोई ब्याह शादी में नाच मुजरा न कराये।

रसिकलाल—अरे उन पागलो को बकने दो। लाख लेक्चर दे, नोटिस बांटे, अखबार छपवाये, उनकी सुनता कौन है? जिसने रंडी के नख़रे, नायिका की गालियां, और उस्तादों के दुवाये नहीं ली उसकी भी कोई ज़िन्दगी है। क्यों न उस्ताद जी?

बजरङ्गलाल—ठीक है बाबूजी, क्या कही है? जुआ फाटका घुड़दौड़ जो क़ानूनन मना है उसको कोई नहीं रोकता, और नाच मुजरा जिससे जी बहलता है और संगीत की उन्नति होती है, सब को खटक रहा है।

राधावल्लभदास—अजी उस्ताद? "चार दिना की चांदनी फिर अंधियारा पाख" वाला मज़मून है, सोडावाटर की बोतल की तरह दो मिनट का जोश है उतर जायगा। भला बतला

इये तो सही, रंडियां ब्याह शादी के मौके पर ही बुलाई जाती हैं। इसी से इनका नाम मंगलामुखी पड़ा है। किसी ने इनको ग़मी या बुरे वक्तों में भी बुलाते देखा या सुना है?

धूमनखाँ—अन्नदाता! ये रंडिया न होतीं तो चौक में पचास रुपये कोठे का भाड़ा डेढ़ सौ कौन देता।

सबलोग—वाह उस्ताद २!

रसिकलाल—उस्ताद! इस वक्त तुमने लाख रुपये की बात कही, लो यह ईनाम (देता है)।

बजरङ्ग—सरकार की जय जयकार, आपही लोगों के दम का जहूरा है हुज़ूर ही का नाम लेकर हम लोग भी जिन्दा हैं। इन लोगों का वश चलता तो ये हम लोगों से अब तक में सारङ्गी की जगह रुई धुनवाते और तबले के एवज़ चर्खा कतवाते।

रसिकलाल—(ईनाम देकर) ठीक है, सच बात तो यह है कि जिनके पास ख़र्चने को नहीं वही रंडियों की बुराई करेंगे। जिनको अंगूर खाने को नहीं मिलते उन्हीं के खट्टे होते हैं।

राधावल्लभदास—क्या दरियादिल है? अभी तुम लोगों ने इन को देखा नहीं है।

बजरंग—क्यों न हो? तब तो आप ऐसे लायक दोस्त उन के साथ हैं। घुरई! बाई जी को हाज़िर करो बाबू साहब कब के आये हुये हैं।

(बाई जी का प्रवेश सबों को आदाब करना)

राधावल्लभदास—(धूमन खां से) उस्ताद जी ? अच्छा साज़ सम्हालो, सारङ्गी की कानें उमेठो, तबले पर थाप जमाओ आप का तो बड़ा नाम है, कैसे गुनी हैं ?

धूमन खां – खुदावन्द, कुछ नहीं ? क्या मै क्या मेरा नाम, यह तो हुज़ूर की नवाज़िश है ? बन्दा किसी काबिल नहीं । हाँ कोई वक्त था ज़रूर जब कि मियाँ तानसेन के क़ब्र पर घंटों रोया है, महीनों इमली की पत्तियां चबाई हैं । बस एक ही रोज़ हुक्म हुआ कि जा तेरी फ़तह, यों तो गाना बजाना सभी जानते हैं, पर क़सम है बड़े मियाँ के पाक रूह की, उसी दिन से चार पांच सौ गज़ की तान मारने लगा, और सुर खींचता तो ढ़ाई तीन मील से कम की न होती । एक दिन अलैयापुर के नवाब सुन कर निहायत ही खुश हुए और ईनाम में एक दर्जन हाथी, चार उगालदान और एक डिबिया माचिस की दिया ।

(सब हंसते हैं)

रसिकलाल—अच्छा शगुल के लिये एक एक बोतल ह्वाइट हार्स और चार बोतल सोडा वाटर तो मंगा लो (रुपया देता है)

उस्ताद - हां बेटी कोई चीज़ जल्दी सुनाओ ।।

मोहनीबाई—(गाती है)

झूम झूम बदरवा बरसे।
आली उन बिन जियरा तरसे।
चलत पुर्बाई सून, सन, नन, नन, नन,
झिंगुरवा बोलत झून, झन, नन, नन, नन,
ऊँची अटरिया मोरवा बोलत,
मोरा कर का कंगनवा करके। झूम झूम०

रसिकलाल—वाह बाई जी, खूब आनन्द किया अब कोई ग़ज़ल सुनाइये।

बाई जी—(ग़ज़ल)
अदालत इश्क में अर्ज़ी सनम पर हम लगायेंगे।
जला कर ख़ाक कर डाला यही दावा लगायेंगे॥
अगर अहले अदालत का, गवाही हम से पूँछेगा।
गवाह अपने ग़मो दर्दो अलम का हम लिखायेंगे।
न लेंगे माल मनकूला न लेंगे ग़ैर मनकूला।
एवज़ डिगरी में हम ज़ुल्फे दुता कुरकी करायेंगे॥

सब लोग—वाह वा! वाह! मज़ा आ गया।

राधावल्लभ दास—अच्छा बाई जी अब थेठर सुनाओ।

बाई जी—नज़रिया की कारी कटारी मोहे मारी।
ओ बांके सिपहिया सांवरिया को दिल देके मैं हारी।
मोहनी मुरत, भोली भाली बतियां।
तन मन धन सब तोपे वारू ं।

पियरवा तोरी सारी, बतियां प्यारी प्यारी।
मैं तो पै जाऊं वारी॥ नज़रिया०

(राधावल्लभ दास नशे में दिवाना हो जाता है और नाचता है)

राधावल्लभ दास—(नशे में गाता है)

राजा हूं मैं क़ौम का इन्दर मेरा नाम।
सब परियों के बीच में, मैं ठहरा गुलफ़ाम।
मैं ठहरा गुलफ़ाम, राम जी, हाथ धनुष लै बाना,
औ खेलन चले शिकार मोरे मुंशी, खेलन चले शिकार जी।
दिल एक ही से लागा हज़ारों खड़े।
आओ २ डगरिया हमारी। इत्यादि
(गाते २ बेहोश हो जाता है)
(पटाक्षेप)

पर्दा चौथा।

(स्थान कमरा)

(मालती और नाउन बैठी हैं)

मालती—नाउन ठकुराईन! मां ने तुमसे क्या कहा?

नाउन—उनही तो हमका भेजिन है। चलती विरिया ऊ हमें समझाय के कहिन कि "नाउन! तुमसे मालती बहुत हिली मिली है वह अपने मन की सब बात तुम से खोल के

कहेगी कोजाने श्रोका कुछ बेरामी श्रोरामी तो नाहीं है जो मालती ऐसी कलेसित है। एहका भी हमें कुछ ठीक पता नाहीं लागत जो आउत है उ यहै कहत है कि मालती बहुत दूबर होय गय है। सो एक बार जा देख तो आ तेरे गये से सब ठीक ठीक पता लग जाई।" हम आय तुम्हें वैसा ही देखा जैसा अम्मा कहिन रहा। दीदी! तुम तो ऐसन दुबराय गई हो कि पहिचानही नाहीं पड़ती। तुम्हारी न वह देह है न वह चेष्टा न वह हंसता खिलता चेहरा, जैसे जाड़े में कमल मुरझाय जाय। तुम्हार मुंह सूख रहा है। दीदी! तुम्हे देख हमार छाती फटी जात है। इस दुर्बलता का कारन हमें कुछ नहीं जान पड़त आय (अपने पेट की ओर दिखा कर) का सो तो नाहीं है?

मालती—चल दूर हो।

नाउन—एहमें लाज कौन है! हमसे कहने में तुम्हार कोउनौ हान आय—

मालती—(कुढ़ कर) क्यों नाहक हमें छेड़ती है। राह चल कर आई है। थक गई होगी जा सो रह। भला भिक्षुकी को कभी स्वर्ग मयस्सर हुआ?

नाउन-तो का तुम्हे कोउनौ रोग आय खोल के कहती काहे नहीं।

मालती—रोग ओग हमें कुछ नहीं है—

नाउन—तो फिर तुम काहे ऐसी दुबर हौ, हम तो तुम्हें कोउनौ

कलेस नाहीं देखित, आज दिन सब भांत भगवान की तुम पर दया है। जो सुख राजा को भी न होयगा सो तुम्हें मयस्सर है। गहना, कपड़ा, खाने, पहिनने की तो तुम्हें कुछ कमती है नहीं।

मालती—उं: ! खाने पहिनने का दु:ख कौन दु:ख है।

नाउन—दीदी ! तो तुम्हें कौन दुख आय ? सास ननद भी कोई तुम पर कोड़ा करने वाले नाहीं है जो तुम्हे रोज उठ तॉसती हों कोई तुम्हार हाथ पकड़ने वाला नहीं जो चाहो खाव, पियो, लेव, देव सब भांत रजी पु जी हो।

मालती—नाउन ठकुराइन ! तू तो बावरी हुई है अगले समय की भोली भाली है छक्का पंजा तो कुछ जानती ही नहीं, सास ननद भला क्या कर सकती हैं, वे हृदय को तो दुख देही नहीं सकतीं जो कुछ ताड़ना देंगी वह सब केवल शरीर को, मन जो प्रसन्न हो तो वह सब दुख क्या तनिक भी जान पड़ता है। चल यह सब जाने दे तू अपनी कुछ बात कह।

नाउन—हां ! और का ओही बात ठहरी कि 'आन का मूड़ पसेरी सा'।

मालती—नहीं नहीं ठकुराइन ! हम ठठ्ठा नहीं करतीं सच कहती हूं तेरा मैका ससुरा तो दोनों एक ही गांव में है। ससुरार से तू कब आई है ?

नाउन— यही अगहनै में तो—

मालती—भला ! बता तू कैसे रहती है ।

नाउन—दीदी ! हमार कौन हम तो गरीब मनई हन । हमरे है का एकै गांव में ब्याही हन, यह तो सच है पर सुख की रात तो हमौ कबहूं नाहीं देखा, कबहूं एक रांगे का छल्ला तक नाहीं जानित आय । भला गहना, गांठी चूल्हे पड़ा, भांत, भांत के कपड़ा चले हैं सबै लोगबाग पहिनत आय,हम आज तक एकौ अंग में भी नहीं हिरकावा, बेढ़ेगा कपड़ा, लत्ता । पेट का रोटी का भी तो लाला पड़ा है जेहि दिन तुम चार लोगन की टहल कर चार गण्डा पैसा ले आये वह दिन तो भर पेट खाये को भी मिला, नाहीं पड़ी पड़ी टांग रगाड़त अही ।

मालती—यह नहीं पूछतीं । भला, वह तो तुझ को नीकी भांत रखता है न ?

नाउन—ई दुख से तो भगवान की दया से हम बची हन ऐसा तो कब्बौ नाहीं भा कि ऊ हमरे कहे के रत्ती भर भी बाहेर भये हों ।

मालती—कहीं कोई दूसरी ठौर तो उसका लगाव बुझाव नहीं है ?

नाउन—दीदी की बात, भला मजूरा मनई ऊ ई सब बात का जानै ऐसा होता तो बाह्मन छत्री के बीच में रहना ठहरा कैसे निबाह होत । भलामानुस जान सबै उनका आदर करत हैं । चाहे कोई इन्दर की अपछरा काहे न होय पर

हम उन्हें आँखी उठाय कोऊ को ओर ताकत नाहीं दीख।

मालती—ठकुराइन ! तेरे समान सुखी पृथ्वी में कोई न होगा। गहना, कपड़ा, सोना, चांदी का काम कौन है। दूध, मलाई न भी मिला तो क्या? सांझ के बाद दो दिन में जो साग पात भी खाने को मिले और महल दुमहला छोड़ पेड़ के तले जो सोना मयस्सर हो सो अच्छा, पर जो अपना मालिक अपने कहे में हो तो। अपना आदमी जो तन दे तो तिरिया जात को और चाही क्या? उसके समान भाग्यवान और कौन होगा। नाउन तेरा जीवन सफल है। ठकुराइन तुम धन्य हो अपने पांव की धूर हमें दो तो हम माथे चढ़ावें।

नाउन—राम ! राम ! दीदी, ऐसी बात जिन बोला काहेका हमका नरक में ढकेलती हौ। छि. ऐसी बात तुम्हरे कहे योग्य आय, ई बात जाय देव अम्मा हमे जौन बात के लिये भेजिन है उसका तो उत्तर देव।

मालती—(आँख में आँसू भर) कहैं क्या मां से जा कह देना कि मेरी ओर से छाती पत्थर की कर लें समझ लें कि मालती मर गई (रोने लगी)

नाउन—आयँ ! ई का हम तो यह समझ आई रहीं कि तुम अपने जी की बात हमसे कहि हौ पर दीदी तुम तो कुलच्छन फैलाय दीन्हों जो वह बात ना कहिहो तो हम चली जाब, का करिबै इहां रहिके।

मालती— नाउन ठकुराइन ! क्या कहें मेरा करम तो सब भांति से फूट गया। हम जो जो यातना भोगती हैं वह सब मां को नहीं सुनाया चाहतीं वह जो सुनेंगी तो मालती मालती कह और छाती फाड़ मर जायेंगी।

नाउन—अच्छा, तो उनसे कहने को जो तुम बरजती हो तो हमें का पड़ी आय जो कहैं, पर हम से छिपाती काहे हो ?

मालती—ठकुराइन ! तू मुझ से बहुत प्रेम रखती है, मेरा हाल सुन के बहुत दुखी होगी।

नाउन—दीदी, तुम चाहे न कहो, पर हम सब तुम्हरे मन की बात जान गईं। हम जो तुम्हारे सुख दुख की साथिनी न भई तो वह प्रेम कैसा ? वह बंसी कैसी जिसमें मछरी न फंसी, जून पड़े पर जो पुकारे सो न आवे वह परोसी कैसा ? बिना आँधी बौखा के डूब जाय, वह नाव कैसी ? बात के कहते ही जो उसके मरम को न पहुंची वह नारी कैसी ?

मालती—(हंस कर) वाहरे ठकुराइन, तुम तो मसले बहुत अच्छे अच्छे जानती हो, भला तुमने क्या समझा कि मुझे कौन सा दुख है ?

नाउन—दीदी, हमे तो ऐसा जान पड़त आय कि लाला का कोई और से भी कुछ लगाव है।

मालती—कुछ क्या बहुत ही बहुत।

नाउन— हाँ ! सच्चों यहै ब्याधि तुम्हे गरेसे है।

मालती—कहा क्या कि मेरा करम एक बार ही फूट गया (रो रो कर) इतने बड़े घर में आठो पहर भूतिन सी पड़ी रहती हूं। नाउन ठकुराइन, बहुत तुमसे क्या कहूं। तुम भी तो स्त्री की जाति हो क्या जानती न होगी वह असह्य वेदना भला किसके सहे सही जा सकती है। मर्मघात के अतिरिक्त हम तो नित्य नित्य न जानिये कितने लात घूंसे सहा करती हैं। यही जी चाहता है कि गले में फांसी लगा कर मर जाऊं वा विष खा सो रहूं। इतने दिन लों सहा पर अब नहीं सहा जाता। सब लोग मरे जाते हैं मुझे मौत भी नहीं पूछती।

नाउन—वे ऐसे निठुर हैं कि रात को घर भी नहीं आते?

मालती—पहिले तो कभी नहीं आते थे पर अब थोड़े दिन से मुझ पर कुछ दया है कि दूसरे तीसरे दो वा तीन बजे रात को घर आ जाते हैं सो भी उस से लाभ क्या! जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे विदेस, आँख लगते ही भोर हो जाती है। कहाँ तक झीखैं मुझे तो ऐसा दुःख है कि पांव के तले की चींटी को भी न होगा।

नाउन—तुम उनसे एतना डरती काहे हो तुम्हें एतनी डर काहे की है।

मालती—तूने कैसे जाना! क्या मैंने कोई बात उठा रक्खी है कितनी बार समझाया, खुशामद किया, भरसक बरजी भी, सब कर थकी पर किसी बात से कुछ काम न सरा हम यह

सब जानती हैं कि स्त्री के लिये पति ही परम देवता है चित्त से पति की भक्ति भी है पर क्या करें यातना नहीं सही जाती इससे जो मन में आता है सो कहनी अनकहनी सब कहती है पर वह परेतिन तो दिन रात उन पर चढ़ी रहती है उसके उतारने का तो कोई उपाय ही नहीं।

नाउन—उपाय काहे कोई नाहीं न ? ई का कहती हौ। तोहरे मैके के गउना मां झब्बू लाला की बड़ी बखरी के पिछवाड़े जो भगुआ डफाली न रहत है ऊ बड़ा गुनी है। तोहरे हामी भरै की बात है जो तू कहा तो हम ओहका बुलाय के सब ठीक करा देई।

मालती—ना ठकुराइन ! यह तो मुझसे कभी न होगा। इस सब फेर में मैं नहीं पड़ा चाहती और इस सब से सिवाय हानि के लाभ कुछ भी नहीं है। ये सब बड़े ही ठग होते हैं। इनके फेर में पड़ना बड़ा ही धोखा खाना है। अभी मेरे पड़ोसी मिट्ठू लाल ही के घर में न मालूम क्या हो गया होता ?

नाउन—उनके घर का भवा रहा दीदी ?

मालती—यह बड़ी कथा है कौन मुंह पिरवावे।

नाउन—नाहीं दीदी बताओ तोहरे पांव पड़ी।

मालती—मिट्ठू लाल की बहू का भी ऐसे ही करम फूट गया था उसका भी पति घर में नहीं रहता था उसकी मां ने

यह बात सुन कहीं से कुछ टोटका दवा के बहाने उसके पास भेज दिया कि वह दूध में मिला कर अपने पति को खिला देवे। सांझ को जब उसका स्वामी ब्यालू करने आया तब दूध में वही औषधि छोड़ दूध का कटोरा थाली के पास रख दिया और आप वहीं खड़ी रही जब उसके पति ने और सब वस्तु भोजन कर दूध का कटोरा हाथ में लिया तब उसने आ हाथ पकड़ लिया और कहा "तुम दूध मत पियो।"

नाउन—ई काहे पहिले आप ही तो दूध पीने को दिया पीछे वहां पीने को बरजा भी?

मालती—न जानिये क्या उसके मन में आई जो दूध पीने को मना किया। जब उसके स्वामी ने इसका कारण पूछा तो कहने लगी।

नाउन—क्या कहा?

मालती—कहा कि "तुम घर में नहीं रहते इसी से हमने एक बशीकरन की दवा इसमें डाल तुम्हें दूध पीने को दिया है पर अब हमारे मन में आया कि क्या जाने हम जो चाहती हैं उसके विपरीत कहीं न हो तुम प्रसन्न रहो हमारे भाग्य में जो बदा है सो होगा"।

नाउन—तब उसके स्वामी ने क्या कहा?

मालती—उसने कहा "हां तूने औषधि तक हमें वश करने के लिये कर डाली! यह कौन दवा है भला देखें तो। अच्छा!

इस दूध को ढाक रख, कल देखेंगे" यह कह हाथ मुह धो चल दिया दूसरे दिन सवेरे आ कर दूध का कटोरा खोल कर जो देखा तो उसमें एक इतना बड़ा (हाथ से इङ्गित कर) "कछुआ"।

नाउन—ऊं:, भला भवा अगर जो दूध पी लेता और इतना बड़ा कछुआ पेट में पैदा हो जाता तो वह बेचारा मर ही जाता बशीकरन तो एक ओर रहा मांग का सेंदुर भी गा रहा। जाय देव ऐसी बशीकरन तुम दीदी!

मालती—जो हो खाया तो नहीं पर औषधि करने का फल उसे मिल गया।

नाउन—क्या?

मालती—उसका स्वामी बुद्धिमान था वह यह सब देख बोला "प्रिये! हमने तुम्हें यातना दी तौ भी तुम्हारा प्रेम हम पर कुछ असर न कर सका। हा! हम बड़े ही अधम हैं जो ऐसी पतिव्रता स्त्री को त्याग कर कुकर्म में आशक्त हो रहे है, अब मैं आज से शपथ करता हूं कि सांझ भये पर कहीं न जाऊंगा" तब से फिर कोई बुरी बात उसकी नहीं सुनने में आई, मेरा ऐसा भाग्य कहां जो वैसा हो? (कुछ सोच कर) नाउन ठकुराइन! हम तो अब जाती हैं तुम कल तक अभी रहो।

नाउन—दीदी! तुम्हार उपकार जो हमसे कुछ हो सके तो हम

एक दिन का पांच दिन रह सकित आय (शब्द सुन कर) ई का बाहेर का केवाड़ा बोला।

मालती - हां अब आने का समय हुआ मैं अब जा कर सोती हूं।

जाउन -अच्छा-(प्रस्थान) (मालती का शयन)।

पर्दा पांचवां

(स्थान—मोहिनी वेश्या का घर)

(मोहिनी और राधा वल्लभ दास बैठे हैं पास बोतल और ग्लास रक्खा है)

राधा वल्लभ दास—प्यारी ! तुम्हारी बोली जैसी मीठी है वैसे ही तुम्हारी अक़िल भी तेज़ है। मानो छुरी की धार।

मोहिनी—देख कहीं काट न डाले।

रा० ब० दा०--क्या मुज़ायका है काट डालो, यह जान तुम पर तसद्दुक़ है (बोतल से मद्य ग्लास में उड़ेल) वाह शायर ने भी क्या ही कहा है—

शरा के बाब में मुझ को तो कुछ क़लाम नहीं।
शराब यार पिलावे तो कुछ हराम नहीं॥
अगर थोड़ी सी मय होती तो पी कर मैं वज़ू करता।
खुदा के सामने पैदा थोड़ी सी आबरू करता॥
वायज़ बड़ा मज़ा हो अगर यों अजाब हो।
दोज़ख़ में पांव हाथ में जामे शराब हो॥

ज़ाहिद शराब पीने दे मसजिद में बैठ के।
या वह जगह बता दे जहां पर खुदा न हो ॥

(दोनों का मद्य पान)

भाई उस दिन तो बड़े ही दिक हुये।

मोहिनी—सो क्या ?

रा०ब०दा०—उस दिन जब हम तुम्हारे यहां से गये थे तब करीब ग्यारह बजने का टाइम था घण्टों तक दरवाज़ा खटखटाते रहे यहां तक कि चिल्लाते चिल्लाते गला पड़ गया पर दरवाज़ा न खुला तब लाचार हो रात भर बाहर के चबूतरे पर पड़े रह गये पास ही नाबदान था मारे बू के नाक सड़ती रही। मच्छर सालों ने चोथ खाया नींद भी न पड़ी। देखो ये बड़े बड़े ददोरे तमाम बदन भर में पड़े हुये हैं अब तक नहीं मिटे मानो शीतला निकली हों (गात्र प्रदर्शन)।

मोहिनी—तो बचा तुम खूब छके अच्छा हुआ।

रा०ब०दा०—उंह कुछ पर्वाह नहीं। लो जान साहब ! एक ग्लास तो और लो (दोनों का मद्य पान) और क्या ? क्या बात है !

शेर।

बाम तमासा करि रही विवस बारुनी सेय।
झुकति हंसति हंसि हंसि झुकति झुकि २ हंसि २ देय ॥

ग़म ग़लत करने के मैं पीता हूं मय ।
इससे बेहतर ग़मरुबा देखी न शय ॥
एक दो जाम की खातिर न चुरा मुझसे आंख ।
ऐन मस्ती में तू मुझको न दगा दे साक़ी ॥
भाई तुम्हारे में बड़ा साहस है !

मोहिनी—क्यों क्यों मैंने ऐसा क्या किया ?

रा०ब०दा०—यही कि जो तुम्हें रक्खे है वह यही समझता होगा कि तुम उसके सिवाय दूसरे के न जानती होगी पर तुम्हारा कुछ और ही रङ्ग है। जो तुम्हें खाना, कपड़ा, ख़रच, पात सब कुछ देता है और सब तरह का धौंधस उठाये हैं उसे जुल दे हमारे साथ आमोद प्रमोद करती हो।

मोहिनी—अबे तू हम लोगों का रंग ढंग क्या जान सकता है भड़ुए ! हम लोगों का काम ही यह है। जिससे राज़ी हों जिस पर जी आ जाय उसकी ख़िदमत में सब तरह से हाज़िर हैं और जिस मुये से जी न मिलै वह चाहे कोट जतन करै उसका सब कुछ पेंठ निबुआ नोन चटाय दें। हम लोगो ने कितने ही के बना रक्खा है जैसा चाहती हैं वैसा नाच नचाती हैं। (नेपथ्य में किवाड़ा खटखटाने का शब्द)।

रा०ब०द०—(भय से चकित हो) यह कौन आया ?

मोहिनी—चुप चुप ! और कौन होगा वही निगोड़ा आया होगा

(चिल्लाकर) हां ! हां !! सुना है, खड़े रहो, आती हूं क्या पानी बरसता है जो इतना जल्दी कर रहे हो। महरा न मालूम कहां चला गया। हम से कह गया 'जाते हैं तेल लेने। तेल भी न लाया लेम्प भी बुझ रहा है और वह न जाने कहां सटक गया।'

(नेपथ्य में) महरा तो कहीं नहीं गया। सदर दरवाज़ा तो उसी ने खोला है आज देखते हैं सीढ़ी तक का दरवाज़ा बन्द है। क्या रग ढंग मचा रक्खा है ?

मोहिनी—(विकृत स्वर से) रंग ढंग क्या मचा रक्खा है ! मरन है।

रा० ब० दा०—मोहिनी ! मोहिनी !! तो अब हम कहां जायं ? कहां लुकैं ? अब हमारी क्या दशा होगी ? हम आज क्यों आये ? क्यों तू ने आज हमें आने को कहा था ? अब हमारे बचाव की कोई सूरत निकाल किसी तरह से।

नेपथ्य में—दरवाज़ा क्यों नहीं खोल देती कब तक हम यहां अंधेरे में खड़े रहें।

रा० ब० दा०—अब क्या करें कहां जायं (घबराया हुआ इधर उधर घूमता है)।

मोहिनी—(रा० ब० दा० से) तुम इतना घबड़ाते क्यों हो ? तुम्हें डर किसकी है (चिल्ला कर) हां ! हां सुनती हैं खड़े रहो आती तो हैं। बाप रे बाप घोड़े पर चढ़े आये हैं क्या ! खड़े रहो सावन भादों की रात है, बादल छाये हैं, लैम्प भी

बुझ गया, हाथ पसारे भी नहीं सूझता। दरवाज़ा न बन्द कर रक्खें। कोई चोर उचक्का आवे तो कैसी हो (रा० ब०दा० से) देखो ! एक काम करो अंगा कुरता उतार डालो उस खूंटी पर मेरी धोती और चादर रक्खी है पहन लो। (नेपथ्य में) अरे तो दरवाज़ा कब खुलेगा ?

मोहिनी—(चिल्ला कर) आज कौन ऐसी कमाई कमा के आये हो जो थोड़ा सा सबर नहीं किया जाता। लैम्प बुझ गया है जला लें। दियासलाई का बक्स निगोड़ा भी न जानिये कहाँ हिराय गया घड़ियों से ढूंढ़ रही हूं मिलता ही नहीं (रा०ब०दा० से) पहन लिया धोती ? चादर भी ओढ़ लो घूंघट काढ़ चुप चाप जा बैठो उस कोने में (दिया सलाई हाथ में लै ऊंचे स्वर से) दियासलाई ऐसा सिहलाय गई है कि इतनी एक घिस डाला जलती ही नहीं। सस्ती ढूंढ़ कर लाते हैं। इन्हें तो जिसमें पैसा बचे सो करना (दियासलाई जलाय मुंह से फूंक उसे बुझा देती है) मुई एक भी न जली घटों से सिर मार रही हूं (रा० ब० दा० से) हो गया सब; पलंग के पास जा बैठो। खबरदार ! सनकना नहीं और न किसी ओर ताकना, न कुछ बोलना (लेम्प जलाय बोतल ग्लास इत्यादि हटा दरवाज़ा खोलने जाती है और रसिक लाल के साथ फिर आती है)।

मोहिनी—(रो रो कर) तुम जो मुझे इतना चाहते हो ख़रच, पात

सब देते हो यह देख इस मुहल्ले के लोगों की छाती फटती है। न जानिये किस अधम पापी ने मेरी मां से जा कहा है कि 'तुम्हारी बिटिया को हैज़ा हो गया है—सो मां हमारी अधीरज हो न कुछ खाया न पिया भूखी, प्यासी, हफटाती, हफटाती आई हैं—आया चाहें हमारे सिवाय दूसरा उनके और है कौन ? (हाथसे दिखाय)वह देखो बैठीहैं।

रसिक लाल--(चकित हो) मां आई है ? ऐसे बदज़ात लोग भी हैं ऐसों को मौत क्यों नहीं आती ! न जानिये यह कौन सा बदमाश आदमी था जिसने मां को इतनी तक़लीफ़ दी। हम समझते हैं यह वही राधा बल्लभ होगा वह साला तीन चार दिन हुए तुम्हारा नाम लै लै हम से ठट्ठेबाज़ी करता था और बहुत सी सख़ सख़ बातें भी कही थीं निश्चय यह उसी का काम है (सोच कर) ज़रूर वही है। इस मुहल्ले में दूसरा कोई नहीं है जो हमसे ऐसी बदज़ाती करे।

मोाहनी—वही हो या दूसरा कोई, मां मेरी दिन भर की भूखी है; जल तक नहीं पिया; हमारा छुआ खायँगी नहीं इसलिये की हम ख़ानगी वेश्या हो गई हैं जाति छू गई धर्म छू गया तुम सत्कुल हो तुम्हारा छुआ अलबत्ता खायेंगी।

रसिक०—अच्छा ! हम लाये देते हैं खाने को उनके लिये।

मोहिनी—वह विधवा हैं तीरथ बरत सब कर आई हैं सिवाय पेड़ा के और कुछ न खायेंगी।

रसिक०—अच्छा तो हम जाते हैं पेड़ा ही पेड़ा लावेंगे।

(प्रस्थान)

मोहिनी-(हंसकर रा० ब० से) मां घूंघट खोलो एक गिलास और लो (दोनों का मद्य पान)।

रा०ब०दा०—मोहिनी-तू बड़ी चालाक है। मूज़ी को ख़ूब ही चंगुल में फंसा रक्खा है।

मोहिनी—(मुसकिरा कर) अभी तुमने देखा क्या है! तानपूरा तब तक दुरुस्त नहीं होता जब तक अच्छी तरह उसका कान न मला जाय।

रा० ब० दा०-भाई तू जो चाहे सो कर हम तो अब यहां से भागते हैं। क्या जानिये पकड़ जायं तो बड़ी मुसीबत झेलना पड़ेगा।

मोहिनी—अबे तू इतना डरता क्या है, देख तो अभी हम उस की क्या क्या दशा करती हैं। तुझे किसी ढंग से यहां से न निकालेंगे तो मुआ हम पर शक करेगा। लो एक गिलास और तो छको (दोनों का मद्य पान)।

नेपथ्य में-दरवाज़ा फिर बन्द कर लिया।

रा०ब०दा०—हो आ गया (पूर्ववत् फिर वैसा ही बैठ जाता है)।

मोहिनी-खड़े रहो आती हैं दरवाज़ा न बन्द कर लें तो क्या खुला छोड़ रक्खें (दरवाज़ा खोल फिर दोनो आते हैं)।

रसिक०-(पेड़ा मोहिनी के आगे रखकर) लो मां को दो खायें।

मोहिनी-मां हमारे घड़े का पानी न पियेंगी एक लोटा पानी भी भर ला दो।

रसिक०—अच्छा (जाता है)।

मोहिनी—(रा० ब० के पास जा) मां लो पेड़ा खाओ।

रा०ब०दा०—पेड़ा कौन साला खाता है जो इस समय खाना चाहिये सो खायेंगे (दोनों का मद्य पान)।

मोहिनी—अच्छा वो इसे बांधले; लाया है तो क्या खराब जायगा।

(रसिक लाल का प्रवेश)

मोहनी—मैंने नाहक तुमको इतना क्लेश दिया। पहिले से मुझे कुछ सुध न रही आज एकादशी है मां निर्जल व्रत करती हैं कुछ खायेँगी नहीं और आज रात ही को चली जायेंगी रहेंगी भी नहीं। पास ही उनके गांव का एक आदमी रहता है उसके घर टिक रहेंगी कल भोर भये घर जायेंगी।

रसिक०—यह क्यों मां से कहो अभी रहें दो एक दिन। थकी मांदी आई हैं कहां जायेंगी।

मोहिनी—यह सब मैं पहिले ही कह चुकी हूं पर मां राज़ी ही नहीं होतीं रहने को। हां भले सुध आई तुमने उस दिन कहा हम बनारस जाते हे तुम्हारे लिए झूमड़ और करनफूल अवश्य लावेंगे। ऐसे ऐसे छछन्द भी तुम्हें याद हैं इतनी दमबाजी तुमने किससे सीख रखी है। तीन दिन बीत गये

ख़बर तक न ली मैं जान गई तुमने और कहीं भी कुछ सट्टा पट्टा लगा रक्खा है।

रसिक०—नहीं हम सच ही बनारस गये थे हम कभी तुमसे झूठ न बोलेंगे तुम्हारे सर की क़सम हम झूमड़ और करनफूल तुम्हारे लिये लाये हैं। हमारा तो तन, मन, धन सब तुम्हारे लिये है तुम्हें छोड़ भला हम किसी दूसरे को रक्खेंगे। लो यह झूमड़ और करनफूल (देता है)।

मोहिनी—(ले कर) हाँ गढ़न तो इसकी बहुत अच्छी है तनिक कुन्दन नहीं अच्छा किया गया चलो लाये सो लाये (धीरे से) माँ आई हैं और जाने भी कहती हैं रहेंगी भी नहीं। रात के ऐसे ही चली जायें यह भी अच्छा नहीं लगता। भला और कुछ न हो सके तो एक धोती तो इन्हें ज़रूर चाहिये।

रसिक०—हाँ कहती तो ठीक हो पर इतनी जून लावेगा कौन? महरा साला तो न जानिये कहाँ चला गया आने दो। साले को कल ही जवाब देंगे अच्छा तो हमी जाय।

मोहिनी—अच्छा तो फिर जाना ही है तो जल्दी जाओ नौ बज गये हैं दूकान बन्द हो जायगी तो फिर कहाँ पावोगे।

र०लाल—हाँ ये जाते हैं (गया)

मोहिनी—वर्षों बचा तुम डरते थे कैसी उस्तादी किया कि तुम्हें तनिक दाग़ भी न लगने पाया। हम लोग बाज़ार की बैठने

वाली हैं जिसे हम चाहैं उसके लिये प्राण तक दे डालें। सिर्फ जी आना चाहिये और जिसे हम बिगाड़ा चाहैं उसका निस्तार भी कही नहीं है स्वभाव को नहीं जानता सुन :—

मन से करैं और को ध्यान, दृग से करै और को मान।
अन्य पुरुष से करे बिहार, तन से करे और को प्यार॥

रा०ब०दा०—हाँ! यह तो ठीक है पर ऐसा ही एक दिन तुम हमको भी छकाओगी तुम्हारा कौन बिश्वास "एक नार जब दो से फँसी, जैसे सत्तर वैसे असी"।

मोहिनी—(हँस कर) तुम्हारे ऊपर तो हम तन, मन, धन जो कुछ कहो सब बार डालें। तुम तो हमारी माँ हो तुम्हारे पेट से तो हम पैदा हुई हैं हा, हा, हा, हा, (हँसती है)।

नेपथ्य में—मोहिनी ..३॥

रा०ब०दा०—हो तुम्हारी माँ फिर आई (घूंघट काढ़ वैसा ही बैठ जाता है)।

मोहिनी—खड़े रहो आती हैं (द्वार खोलने जाती है रसिक लाल को साथ लिये आती है)।

र० लाल—लो मा को दो थोड़ा ठहर) माँ कोरा कपड़ा ले कर जायें इसमें हमारा जी खुश नहीं होता। माँ से कहो इसे पहन लें और खाली हाँथ उनको यहाँ से जाना भला नहीं होता। माँ तो ब्राह्मणी है न?

मोहिनी—हाँ माँ उपाध्याय के घर की हैं ।

र० लाल -तो उन्हें कुछ दक्षिणा पैलगी भेंट भी देना चाहिये (पाँच रुपया उसके पांव तले धर साष्टाङ्ग प्रणाम करता है) ।

मोहिनी—अच्छा तो तुम बरामदे में जा बैठो तुम्हारे सामने मां धोती कैसे पहनें ।

र० लाल—अच्छा ! हम जाते हैं मां से कहो पहिनैं ।

(आड़ में हो जाता है)

मोहिनी—मां लो इसे पहिनो (कृत्रिम रुदन के स्वर से) मां मेरी सुध बनाये रहना तुम्हें छोड़ अब और कौन दूसरा मेरा है। जब तक तुम जीती हो मेरे बाप का नाम तो बनाये हो। (धोती पहिनाय उसे बिदा करती है) ।

र० लाल—(सामने आकर) ऐं यह कैसा ? हमारी बीनाई में क्या कुछ फ़र्क़ पड़ गया है ? मां आई यह तो सुना पर मां जब नई धोती पहिनने लगीं तब छाया जो पड़ी सो तो कुछ और ही कुछ थी।

मोहिनी—(कृत्रिम विस्मय पूर्वक) ऐं क्या कहा ! छाया जो देख पड़ी · · । धिक्कार है तुझे लाज नहीं आती । मां मेरी बुढ़िया। मुंहजरे झांकता था ।

र० लाल—नहीं नहीं सो नहीं किन्तु छाया में मर्द का आकार था। छाया स्त्री और पुरुष की अलग अलग होनी चाहिये वह तो मां की छाया में न था।

मोहिनी—(अधिक क्रोध से) फिर वही कहे जाता है मुंहजरे निगोड़े तूने मेरी मां को झांका था। तुझे शक है वह मां न थीं कोई पुरुष था। मैं साफ़ कहे देती हूं कि जो तुमको मेरे ऊपर शक है तो इसमें लल्लो पत्तो की बात कौन सी है तुझको मुझे रखना हो तो रख नहीं तो नहीं सही "जैसा तुलसी राम से, वैसा राम तुलसी से।" जैसा तू मुझ से बर्तेगा वैसा ही मैं भी तेरे साथ बतूंगी। सीधे से रहेगा तो सब सही नहीं तो मोहिनी तेरी नहीं तेरे बाप की नहीं।

र०लाल—मोहिनी! देखो क्रोध में मत आ मैंने साफ़ साफ़ देखा, दाल में ज़रूर कुछ काला है (क्रोध से) चुप रह बहुत बड़ बड़ मत कर, हरामज़ादी! हम सब समझ गये जैसी तू है वह भी जैसी तेरी मां है सो भी मैं जान गया।

मोहिनी—जान गया तो क्या करेगा मेरा भडुये जा अपना मुह काला कर यहां से दाढ़ीजार (मारती है और हाथ पकड़ निकालने लगती है)।

र० लाल—यह क्या तेरा मकान है भाड़ा मकान का तो मैं देता हूं। चौकीदारी, टिक्स देता हूं, पाइप का देता हूं, तेरा मकान है? नमकहराम, बेईमान हरामज़ादी।

मोहिनी—तेरा मकान है? मैं बेईमान, नमकहराम हू? अच्छा! तू ही रह यहां। मैं अपनी जिनिस, पात सब लेकर चली

जाती हूं। अब एक छिन भी यहां न ठहरूंगी सिर खा गया निगोड़ा (गाली देते निकल जाती है) ।

१० लाल—उफ़ हरामज़ादी ! मानो काली सांपिन, कल्लेदराज़ी के बल छिपाया चाहती है। वह उसकी मां हरगिज़ न थी कोई पुरुष अवश्य था (पलग के नीचे देख) यह क्या बोतल और ग्लास हैं । साले ने शराब पी है मालूम। ओः ऐसा धूर्त्त जो मैंने समझा था वह किसी तरह झूठ न था हरामज़ादी की पिल्ली ने मुझे कितनी गालियां दी मार भी गई (छड़ी देख) यह छड़ी भी उसी की है गठरी के भीतर न समा सकी इससे छोड़ गई। ऐं इसमें कुछ लिखा है। क्या लिखा है देखें तो (लैम्प के सामने पढता है) R. B D. ऐं ! यह किसका नाम हुआ (सोच कर) ओः ! उसी साले का नाम होगा। ठीक है। R से राधा B से बल्लभ D से दास। निश्चय उसी साले का नाम है। वही था। क्या कहें पहिले से जानते होते तो साले को ख़ूब छकाते । हा ! बड़े शरम की बात हैं जो कोई इस हाल को सुनेगा मुझे गधा बनावेगा पर इस गधेपन का कारण क्या है ? वही हरामज़ादी (सिर पर हाथ रख) यह क्या फूल आया है। खून भी बह रहा है। हरामज़ादी ने ऐसा मारा कि लहू निकल आया (जाता है) ।

———

पर्दा छठां

स्थान सड़क

रसिकलाल — हा धिक् ! अब हम संसार में क्या मुंह दिखायेंगे। हा ! उस राक्षसी ने हम पर क्या मोहनी डाल रक्खी थी कि मैंने अपनी व्याही सती स्त्री को कितना दुःख दिया। जब से मैं उसे व्याह के लाया, सुख देना तो दूर रहा उससे मुंह भर बोले तक नहीं, उसी पतिव्रता, सती, सावित्री ही के श्राप से निश्चय आज मेरी यह दशा हुई। हाय ! मुझ से किसी प्रकार का भी सुख उसको न मिला। स्त्री और पुरुष में जो बात होनी चाहिये वह दूर रही मैंने पेट भर अन्न और तन ढांकने को कपड़ा तक उसे न दिया। हा ! धिक्कार है मुझ अधम पापी को ! मैं किस घोर नरक मे ढकेला जाऊंगा, उसी दिन सांझ को कितना कष्ट उस सती को पहुंचाया। यहां ही आने के ज़रा से कारण के लिये उस दिन व्यारी नहीं किया; थोड़ा ठहरने के लिये कहा सो भी न ठहरा वरन व्यर्थ को गाली गुफ़ा दिया और मारा भी। कम्बख़्त ! हरामज़ादी ! ऐसी बात बोलती थी मानो मुझे छोड़ कभी किसी को सपने में भी नहीं देखा। हाय ! मेरे समान गधा दूसरा कौन होगा ! चलते चलते मुझसे सैकड़ों का माल झूमड़, करनफूल

फंस ले गई। और उस बदमाश को देखो कि किस तरह से हमें उल्लू बना इस कुकर्म में ला पटका। निस्सन्देह ऐसे ही चिकने, चुपड़े, मीठे मुंह वाले ठगों के फन्दे में फंस हमारे ही ऐसे कितने ही बेचारे अपने को बरबाद कर डालते हैं। हा !

दोहा ।

काम अग्नि ज्वाला सुरति, इन्धन परम सनेह ।
होम करें सब नर जहां, धन अरु यौवन, गेह ॥
बहु फल फले कुलीन द्रुम, परउपकारक फूल ।
भक्षित वेश्या विहंग सों, निष्फल होहिं समूल ॥

हा ! अब मेरा किस प्रकार निस्तार होगा। निस्संदेह उसी सती को कष्ट पहुंचाने ही के कारण मेरी आज यह दुर्दशा हुई। अब तो जैसे हो उस सती को प्रसन्न करने ही में मेरा कल्याण है। सच है जिसका जैसा काम होता है उनको वैसा ही परिणाम भी मिलता है। (प्रस्थान)

गर्भाङ्क सातवां।

(स्थान=मालती का शयन गृह)

(नाउन बैठी है और मालती उसका पुरुष वेष बना रही है)

नाउन -दीदी ! यह मूंछ तुम्हें कैसे मिल गा ?

मालती– तूने तो देखा होगा कि हमारे घर के पिछवाड़े अहीरों का एक बाड़ा है उसके दूसरी ओर जो घर है उसमें नाटक करने वालों की एक मण्डली उतरी है, उन लोगों को मूंछ दाढ़ी आदि का काम सदा पड़ता है?

नाउन—तो फिर तुम्हें ई कैसे मिल गा?

मालती—जो लोग नाटक में हैं उनमें से एक का लड़का नित्य मेरे घर खेलने आया करता है, एक दिन वह यह मूंछ लाया उसी से मैंने इसे मांग लिया।

नाउन– दीदी! तुम बड़ी चतुरी हो, भाई हमका बड़ी लाज लागत आय। कांछ खोंस, ओड़ा जामा पहिना, मूंछ लगाय पाग भी बांधा। छी! छी!! भाई तुम आज हमें का कर दिन्ह्यो।

मालती– (हंस कर) भली तो लगती है, लाज किसकी है, क्या कोई देखता है? हां! तनिक पगड़ी से चाहे लाज लगती हो, ठीक जैसे गवद्दराय हों।

नाउन—हां! हम गवद्दराय मालूम होइत आय। तनिक दर्पनी देव। मुंह तो देखन।

मालती—(दर्पनी देकर) लो देखो न, क्या मैं झूंठ कहती हूं?

नाउन—(दर्पनी में मुंह देखती है) वाह! ई तो हम मेहरिया से मनसवा बन गई ह ह ह ह! (हँसती है) हम जब बोलती हैं तो मूंछ हिलत है, ह ह ह ह! दीदी तुम ठीक

कह्यो पतनी जून तो हम गवदूराय ही जान पडत आय । मुंह जैसे जरा चूल्हा आँख घुच्चू सी, तेह पर ई पाग से तो औरहू हँसी छूटत आय ।

मालती – नहीं ! नहीं !! तेरा मुंह तो बहुत भला मालूम पड़ता है।

नाउन—अच्छा ! भाई जो तुम्हें रुचे (मोछों पर हाथ फेर हँसती है) तो फिर हमार नाव गोबर्द्धन दास भट्टाचार महामहोपध्याय ह ह ह ह ! (हँसती है) ।

मालती – दुर, भट्टाचार और दास, ब्राह्मणों के नाम के अन्त में कहीं दास पद लगाया जाता है ? अच्छा जाने दे अब उनके आने का समय हुआ सावधान हो जा, जिसमें चाल ढाल बातचीत में किसी भाँति स्त्री न मालूम हो ।

नाउन—ये ही तो हमहू चाहित आय, दीदी हमें बड़ी भय लागत आय और हँसी छूटत आय । हम का मरद की नाईं चल सकब, कि वैसा बोली बोल सकब ?

मालती - क्यों न सकेगी ? न हो पहिले से सीख रख ।

नाउन– अच्छा ! तो एक बार चल के देख लेई (पुरुष के समान चलती है) छि. ! भाई हमें बड़ी लाज लगत आय (बैठ गई)।

मालती - तो लाज से तो काम न सरेगा। तनक चल तो सही ।

नाउन—(फिर चलती है) ऐसे चली ह ह ह ह (हँसती है) ।

मालती —भला हमारे साथ बात चीत कैसे करेगी ? पहिले दो एक बात बोल तो हम सुनें ।

नाउन- पहिले तोहसे हम ई पूछब कि तोहार पेट काहे फूला बा ? आज तुमने काहे की रोटी खाई है ? बेर्रा की कि ज्वार की। तुम कबहूं सावां का भात खाये हो ? यही तरह से और।

मालती—दुर पागल, जो पुरुष पर स्त्री को अपने वश किया चाहता है वह क्या ऐसी ही ऐसी गंवारपन की बात पूछता है ?

नाउन—ई काहे ऐसी बात पूछे में दोखु का है ? तो फिर और का पूछी ?

मालती—पागल कहाँ की, भई बड़ी पागल है। ऐसे ऐसे ठौर प्रेमालाप करना होता है।

नाउन—प्रेमालाप कैसे करे होत आय; भाई, सो तो हम नाहीं जानित। एक बेर बोलो सुनी।

मालती—अच्छा सुन, हमारे कंधे पर हाथ रखकर कह "प्रिये ! जब से तुम्हारी रूपमाधुरी अपने नयनों से देखा तब से तन, मन, धन सब सब तुम्हें समर्पण कर दिया।" बोल देखूँ बनता कि नहीं।

नाउन—पिरये ! जबसे तुम्हार रूप मादुली नैनों देखा तब से .. और का कही।

मालती—(हँस कर) दुर अभागी, अच्छा तो एक एक शब्द कह जब से··· इत्यादि

नाउन—पिरये ! जबसे-तुम्हार ··रूप, माधुलि···देखा तब फिर का कही ! भूल गयन ।

मालती—हां हां !! मुंह में है पर कह नहीं सकती । अच्छा ! जाने दे । बोल—प्रिये ! तुम्हारे बिरहाग्नि से हमारा अन्त:करण दग्ध हो रहा है, अपने वचनामृत के दान से शीतल करो ।

नाउन—पिरये ! तुमार बेरागिन हमार अन्तकरना दध दध··· तब का कही ? भाई हम तो भूल गइन ।

मालती (खीझ कर) मर न और का ।

नाउन - दीदी ! हम ई भी न कहि सकब ।

मालती - अच्छा ! तो जाने दे । तू रूठ जा फिर तुझे कुछ न कहना पड़ेगा, केवल हूं हूं करना ।

नाउन -यही अच्छा है । पर भाई हमें हँसी आवत है । ह ह ह ह (हँसती है)

मालती—अरे यह क्या ! हँस के बिगाड़ेगी क्या ? (पैर की आहट सुन) चुप चुप चुप देख वह आते हैं, हम बीड़ी साजती हैं तू रूठ कर बैठ, पर सावधान रहना देख कहीं पहचान लें ।

(खिन्न बदन रसिकलाल का प्रवेश)

रसिक—(स्वगत) हा ! निस्संदेह उस दुष्टा के फेर में पड़ क्या क्या कुकर्म मैंने नहीं कर डाला ? हा ! उस नीच कुकर्मी

राधावल्लभ के फेर में पड़ कैसा अपने को नष्ट कर डाला ? दुर्जन पर विश्वास करने से किसको क्लेश नहीं होता। रात ढेर गई अवश्य वह सती सो गई होगी। हा! इस बेचारी ने मेरे कारण कैसे कैसे कष्ट उठाये (कुछ आहट पाकर) मालूम होता है अभी सोई नहीं जाग रही है (देख कर) यह क्या ? जो अभी तक लैम्प जल रहा है ! यह सुगन्धि कैसी आ रही है ? सेज भी बहुत साफ और सुथरी बिछी हुई है। ऐं ! आज तो बड़े बड़े सामान देख पड़ते हैं। चारों ओर खूब सजा है और मालती भी वेष भूषण किये पान की बीड़ी साज रही है। (कुछ सोच कर) ऐं ? यह मामला क्या है ? कोई बात मेरे ध्यान में नहीं आ रही है। आज यह बात क्या है !! (खड़ा हो झरोखे से देखता है)।

मालती—(स्वगत) अब किस प्रकार की बात करनी उचित है (प्रगट नाउन से) आप जो आये सो तो बड़ी ही कृपा की पर अब आप यहां क्यों बैठे है। यह सेज अपने चरण रज से पवित्र करिये। हमने इसे तुम्हारे ही लिये साज रक्खा है। इसे सफल करो शिर झुकाये क्यों बैठे हो, हमसे कौन सी ऐसी चूक बन पड़ी जो रूठ गये।

रसिक—यह सब बात यह किससे कह रही है, कहीं इसने मुझे देख तो नहीं लिया ? क्या कोई दूसरा पुरुष घर में है ? यह सब मामला क्या है !!

मालती—प्यारे ! आज तुम म्लान बदन क्यों हो ? तुम्हें उदास देख मुझे बड़ा दुःख होता है।

नाउन—हटो तुम हमसे मत बोलो।

मालती—तुम्हारे पांव पड़ती हूं क्षमा करो, क्रोध दूर करो।

नाउन—चलो हटो तुम हमें जैसा चाहती हो वह हम सब जानते हैं '

मालती—ऐसी बात मत कहो तुम प . ता मैंने अपना तन, मन, धन, जीवन, यौवन सब समर्पण कर दिया है, तुमने आज आने को कहा था इस कारण बड़ा यतन कर यह सब सामान मैंने इकट्ठा किया है। लो यह पान खाओ। देखो मैंने इसमें कैसे कैसे मसाले छोड़े हैं। लाओ मैं खिला दूँ। (पास जा उसे पान खिला देती है, और प्रणय पूर्वक उसे शैय्या पर बैठाती है तत्पश्चात् आप भी बैठ जाती है) क्यों क्यों तुम मुझसे क्यों गुस्सा हो ? आज मेरा सब मनोरथ सफल हो गया। देखो बड़ी मेहनत कर यह हार मैंने तुम्हारे लिये गूंथा है। लाओ यह हार तुम्हारे गले में डाल अपना जीवन सफल करें (हार पहिना देती है)

रसिक-(देख कर क्रोध से, स्वगत) पापीयसी ! तेरी इतनी ढिठाई कि तू एक धींगरा बुला घर बैठाया ! तेरी ऐसी कुप्रवृत्ति ? व्यर्थ ही इसे हम सती, सावित्री समझे हुये थे।

किसी दूसरे के साथ गुप्तप्रेम में फँस स्त्रियाँ क्या क्या नहीं कर डालतीं? हा! संसार मे किसी स्त्री पर विश्वास करना और उसे भली समझना निरी मूर्खता है—

दुष्टे! देख मैं अभी तुझे और तेरे प्राणनाथ दोनों को मारे डालता हूं, पहिले जाकर सांकर दे आवें–(सांकर लगा फिर आता है) थोड़ी देर पहिले यहीं खड़े रह देखूं मैं इसे पहिचान सकता हूं कि यह कौन आदमी है? (देखने लगा)

नाउन–भला! कदाचित् इस समय तुम्हारे स्वामी आ जाय तो तुम क्या करो?

मालती–आवें न डर किस बात की है, क्या उन्हें यह सब मालूम नहीं है?

रसिक–(क्रोध से स्वगत) पापीयसी! दुष्टे!! दुराचारिणी कुलटे!!! कहती है हम सब जानते हैं।

नाउन–नहीं नहीं यह कैसे हो सकता है वे जानते होते और कुछ न कहते!

मालती–कहेंगे क्या? पहिले वे अपने लच्छन तो देखें कि वे क्या करते हैं!

नाउन–आप करते हैं तो क्या तुम्हे भी वैसाही करने को कह दिया है।

मालती–और नहीं तो क्या, मैं रात दिन अकेले इतने बड़े

घर में भूतिन सी पड़ी रहूं और आप मनमाना जहां चाहें तहां रहें। जानने में क्या कुछ बाकी है? अवश्य ही जानते होंगे, कुछ ऐसे निर्बोध भी तो नहीं हैं, चलो यह सब जाने दो। आओ हम तुम दोनों मिल आनन्द करें।

रसिक-(क्रोध से स्वगत) अब तो मुझसे नहीं सहा जाता। ओह! इतना बड़ा साहस कि एक धींगरा यह नित्य अपने यहां बुलाती है। निस्संदेह स्त्री मात्र का विश्वास संसार से उठ गया। चलें इन दोनो ही को मार अपना कलेजा ठंढा करें (घर के भीतर जा) (प्रकाश) आज तो बड़ा रङ्ग राव मचा रक्खा है (दोनों डर गईं और नाउन भाग कर घर के एक कोने में जाकर छिपती है) पापीयसी! मेरे जीते ही जी इतना उधम मचा रक्खा है?

मालती—क्यों क्यों हुआ क्या बताओ तो?

रसिक—दुष्टे! घर में किसे बुलाकर बैठाया है कहती है हुआ क्या? हुआ क्या!

मालती—कोई तो नहीं, घर में तो दूसरा कोई आदमी नहीं है तुम्हें कुछ भ्रम तो नहीं हो गया?

रसिक—(क्रोध से) हां मुझे भ्रम हो गया है, उसे कहां लुका रक्खा है? अब वह कहां बच कर जा सकता है! देख मैं उसका शिर काट डालता हूं पीछे तेरी भी बोटी २

काट डालूंगा। तेरा इतना बड़ा साहस! तू बडी पतिव्रता न थी? तू ने तो पर पुरुष का मुख कभी नहीं देखा था?

मालती—बस अब चुप रहो, बड़े बने हो जो मुंह में आता है बके जा रहे हो।

रसिक—तू धींगरा बुला घर में बैठावे और मैं कुछ भी न बोलूं।

मालती—मैं तो किसी को भी नहीं बुलाया और जो बुलावेंगी भी तो तुम मेरा क्या करोगे? पहिले तुम अपना लच्छन तो देखो।

रसिक—तो जैसा मैं करता हूं तू भी वैसा ही करेगी, पापिनी!

मालती—क्यों नहीं, क्या मेरा आदमी का चोला नहीं है? या कि मेरी देह लोहू मांस की नहीं है? क्या मेरे मन नहीं है? क्या मेरे इन्द्रियां नहीं हैं? क्या मुझको सुख दुख का ज्ञान नहीं है? मै तो कोई चीज़ ही न ठहरी और फिर तुम मेरा बड़ा सत्कार करते हो न!

रसिक—(क्रोध से) मैं अभी तेरा शिर काट डालता हूं।

मालती—(शिर झुका कर) लो काट डालो, ऐसा हो तो फिर क्या मैं सब यातना ही से न छूट जाऊं?

रसिक—देख! वही तो करते हैं, पहिले तेरे सामने तेरे प्राणनाथ का नाश करते हैं तिस पीछे भांति भांति की यातना भोगा तुझे भी मार डालेंगे। बता वह धींगरा कहां गया? (इधर उधर ढूंढ़ता है)

मालती—(डर कर) उसे तो तुम न मार सकोगे, मुझी को मार डालो (आदि कहती हुई रसिक का हाथ थाम लेती है रसिक नाउन पर झपटता है और इसी लपटा झपटी में नाउन का पुरुष वेष उतर जाता है ।)

रसिक–(आश्चर्यित हो) यह मामला क्या है ! यह तो स्त्री है (देख और सोच कर) क्या यह वही नाईन तो नहीं है जो माधोपुर से आई है (नाउन से) यह क्या रे ?

नाउन—हां ! हम ही तो हन । दीदी ठकुराइन ई सब कदर्थना मोर किहिन आय दोहाई बबुआ जी कै, हमार यहिमा कोउना दोखु नाहीं न, हमें छिमा करो (रसिक उसे छोड़ गर्दन नीची कर लेता है)

मालती—यह क्यों गर्दन क्यों नवा लिया ?

रसिक–मालती ! यह सब क्या वृतान्त है ? मैं तो तेरा कुछ भी अभिप्राय न समझ सका ।

मालती—नाथ ! तुम समझते हो मैं व्यभिचारिणी हूं मैं निरी कुलटाही हू ? मुझे कुल के कलंक की कुछ भय नहीं हैं ? मैं सदा कुकर्म ही किया करती हूं ? यह निश्चय समझो हम स्त्रियो के मन में पूरे तौर से समाया हुआ है:— "इहा मुत्र च नारीणां परमाहि गतिः पति" इस लोक और परलोक दोनो के लिये स्त्रियों को पति ही शरण है।

रसिक—यह नहीं, हम सब जानते हैं पर यह बात क्या थी? आज तुमने यह सब क्या रचना रची है? सो तो कहो।

मालती—पहले तुम बताओ यह सब देख तुम्हारा चित्त कैसा हुआ?

रसिक—मुझे तो ऐसा आवेश आया कि मैं उसे कह नहीं सकता पर पुरुष को घर में बैठा देख मुझे ऐसा क्रोध हुआ कि उस क्रोध के आवेश में मैं अपना शिर काट डालता तो कुछ आश्चर्य न था। यही जी चाहता था कि पेट में कटार भोंक लू। इस असार संसार से मुझे ऐसी घृणा हुई कि इसी समय गृहस्थी त्याग, मूड़ मुड़ा सन्यासी हो जाऊँ, अधिक और क्या कहूं-मालती! मेरा मन ऐसा व्याकुल हुआ कि मैं उसे वचन द्वारा नहीं प्रकाश कर सकता।

मालती—यही देखने को तो मैंने यह सब रचना रची थी। नाथ! तुम्हो विचार देखो-तुम्हें तो ऐसा क्रोध हुआ, तुम तो बुद्धिमान हो, पढ़े लिखे भी हो, परमेश्वर ने तुम्हें विवेचना शक्ति दी है, तुम एक दीना अबला को सूने घर में बहुत दिनों से एकाकिनी छोड़ आत्मसुखरत हो रहे हो, तुम्ही विचारो हमारे मन में कितना दुःख रहा होगा मन में कितना दु.ख पाती हैं, शरीर से कितनी यातना भोगती हैं, अन्तरात्मा अलगही दुःख से व्याकुल हो उठता है। भला

तुम्ही यह सब बातें सोचो, इसी से मैंने विचारा कि तुम्हें आज कुछ शिक्षा दें।

रसिक—मालती! निस्सन्देह मेरे कारण तुम्हें बड़े बड़े कष्ट झेलने पड़े अब मैं विनय पूर्वक अपने सम्पूर्ण अपराधों की तुम से क्षमा चाहता हूं और आज से शपथ करता हूं कि सिवाय तुम्हारे और किसी अन्य स्त्री की ओर दृष्टि न डालूंगा। आज तुमने केवल मुझही को यह शिक्षा देकर कुमार्ग पर जाने से नहीं बचाया बरन कितने ही इस शिक्षा से लाभ उठा सन्मार्ग पर चलने की चेष्टा करेंगे। धन्य है! ऐसी ही ऐसी सती पतिव्रताओं के आचरण से सदा से भारत का मुख देदीप्यमान सूर्य्य सा तमतमा रहा है तथापि परमात्मा से विनय है कि भरतमुनि का यह वाक्य सफल हो :—

होंहि एक पत्नीव्रत-रत सब भारत नर वर।
तजहि कुपथ, पथ गहहिं धर्म कर, दुर्मति तज कर॥
तजि वेश्या-संग-रमन करहिं श्रद्धा निज तिय पर।
जासों सुधरहि दशा दीन भारत कै सत्वर॥

पटाक्षेप।

॥ इति ॥

---

* इस पद्य को मेरे मित्र बा—महादेव प्रसाद सेठजी ने रचा है जिसके लिये उन्हे विशेष धन्यवाद है—प्रकाशक।